अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है

प्रमाणों और चमत्कारों का विश्वकोश

मुहम्मद ﷺ की नुबूवत और कुरआन के सत्य होने के प्रमाण

वैज्ञानिक चमत्कार · ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य · पूरी हुई भविष्यवाणियाँ

तौरात और इंजील की शुभसूचनाएँ · जिन्न, जादू और अदृश्य का संसार

इतनी सरलता से समझाया कि बच्चा भी समझ ले · 151 रंगीन चित्र

151 प्रमाण, अपनी शक्ति के क्रम में

भाग चार

नबी ﷺ के प्रत्यक्ष चमत्कार

जो उनके साथियों ने अपनी आँखों से देखा और अटूट सनदों के ज़रिये हम तक पहुँचाया: उँगलियों के बीच से फूटता पानी, उनके लिए रोता खजूर का तना, और मक्का के ऊपर फटता चाँद।

16 प्रमाण

आकाश में एक निशानी

106 मक्का के ऊपर चाँद फट गया

> क़ियामत निकट आ गई, और चाँद फट गया। और यदि वे कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं: यह तो चलता-फिरता जादू है।
>
> **सूरह अल-क़मर — आयतें 1-2**

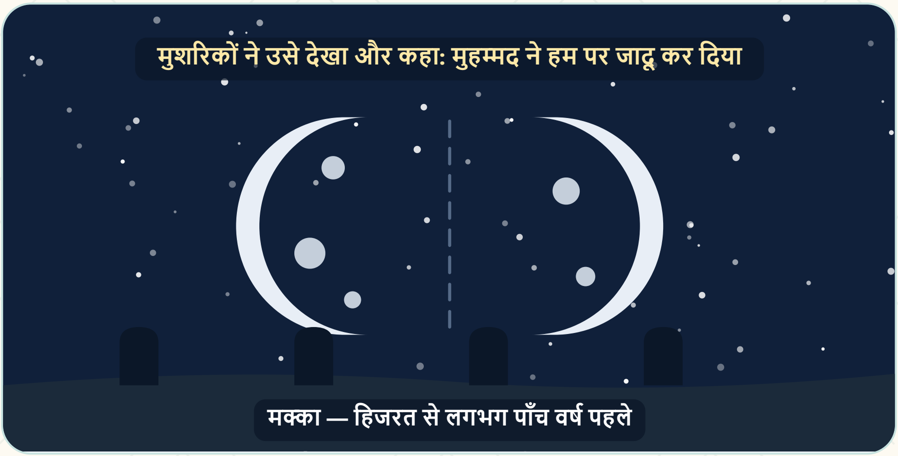

एक घटना जिसे मक्का के सभी लोगों ने देखा — ईमान वाले ने भी और इनकार करने वाले ने भी

सीधी-सादी बात में

चाँद आकाश में दो टुकड़ों में फट गया, यहाँ तक कि लोगों ने उनके बीच हिरा पर्वत देखा। और मुशरिकों ने यह इनकार नहीं किया कि उन्होंने देखा — उन्होंने कहा: **"मुहम्मद ने हम पर जादू कर दिया है।"**

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुरैश नबी ﷺ से उनकी सच्चाई सिद्ध करने के लिए कोई प्रत्यक्ष निशानी माँगते आ रहे थे। जब वह आई तो उन्होंने यह नहीं कहा "हमने कुछ नहीं देखा" — जो सबसे आसान और सबसे सुरक्षित उत्तर था — बल्कि जो देखा उसकी व्याख्या जादू से की। **और यह अपने आप में इस बात की स्वीकृति है कि वे उसके गवाह थे।**

आज विज्ञान क्या कहता है?

आयत **पूर्ण भूतकाल** में आई: "चाँद फट गया" — न कि "फटेगा"। चाँद के फटने की हदीस **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** में कई सनदों से कई सहाबा से रिवायत है: इब्न मसऊद, अनस, इब्न अब्बास, जुबैर बिन मुतइम और अली। और उनकी रिवायतें वर्णन में एकमत हैं: "यहाँ तक कि उन्होंने चाँद के दोनों टुकड़ों के बीच पहाड़ देखा"। हदीस के विद्वानों के अनुसार यह ख़बर तवातुर के दर्जे तक पहुँची है।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

प्रमाण यहाँ अकेली घटना में नहीं, बल्कि **विरोधियों की प्रतिक्रिया** में है। यह आयत उन्हें मक्का में उनके जीते जी सुनाई गई, और उसमें कहा गया कि चाँद उनकी आँखों के सामने फटा। यदि ऐसा हुआ ही न होता तो उनके लिए सबसे आसान बात यही थी कि कह देते: "कब? हमने तो कुछ नहीं देखा।" और वे उन्हें झूठा सिद्ध करने के सबसे अधिक इच्छुक लोग थे, और उन पर कविता, जादू और पागलपन का आरोप लगाने से नहीं हिचके। फिर भी उन्होंने **इनकार के बजाय व्याख्या चुनी** — और यह सम्भव सबसे प्रबल गवाही है। और आयत ने स्वयं उनका उत्तर भी दर्ज कर दिया: "**और वे कहते हैं: यह तो चलता-फिरता जादू है**" — दलील और उसका जवाब, दोनों एक साथ दर्ज।

107 उनकी उँगलियों के बीच से फूटता पानी

उन्होंने अपना हाथ उस बर्तन में रखा, और पानी उनकी उँगलियों के बीच से सोतों की तरह फूटने लगा, और हमने पिया और वुज़ू किया। अनस से पूछा गया: तुम कितने थे? उन्होंने कहा: लगभग तीन सौ।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

वह बर्तन से नहीं फूटा... बल्कि उँगलियों के बीच से

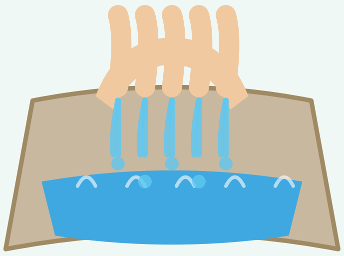

लगभग तीन सौ लोगों ने एक ही बर्तन से पिया और वुज़ू किया

एक दृश्य जिसे अनस बिन मालिक, जाबिर, इब्न मसऊद और दूसरों ने रिवायत किया

सीधी-सादी बात में

पानी ख़त्म हो गया और लोग प्यासे थे। तो नबी ﷺ ने अपना हाथ एक छोटे-से बर्तन में डाला, और **पानी उनकी उँगलियों के बीच से सोतों की तरह फूट पड़ा**, यहाँ तक कि पूरी सेना ने पिया और वुज़ू किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

उस जगह न कोई कुआँ था न कोई वर्षा। और रेगिस्तान में पानी जीवन और मृत्यु का मामला है। सैकड़ों लोगों को एक ही समय पानी चाहिए था। और एक छोटा बर्तन तो एक ही आदमी के वुज़ू और पीने के लिए भी काफ़ी न होता।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना **दोनों सहीह संग्रहों** में अनस बिन मालिक, जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अब्दुल्लाह बिन मसऊद और दूसरों से, अलग-अलग जगहों पर रिवायत है — हुदैबिया में, तबूक में और अन्यत्र। यह एक से अधिक बार हुई, और हज़ारों इसके गवाह बने। इब्न मसऊद कहते हैं: "हम निशानियों को बरकत गिनते थे, जबकि तुम उन्हें डर की चीज़ गिनते हो। हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ एक सफ़र में थे और पानी कम पड़ गया, तो उन्होंने कहा: कुछ बचा हुआ पानी ढूँढ़ो..."

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

विशिष्ट विवरण सोते की जगह है: **"उनकी उँगलियों के बीच से"**, बर्तन से नहीं। यदि कोई कोई ख़बर गढ़ना चाहता तो निकट बात यही होती कि कह देता बर्तन भर गया — वह अधिक सरल है। पर किसी मनुष्य के हाथ की उँगलियों के बीच से पानी का फूटना एक विचित्र और सूक्ष्म वर्णन है जो देखे बिना कहा ही नहीं जाता। और इससे भी महत्वपूर्ण है **गवाहों की संख्या**: अनस की रिवायत में "लगभग तीन सौ", और हुदैबिया के दिन जाबिर की रिवायत में एक हज़ार चार सौ। इतने लोगों के गवाह बनने के बाद रिवायत होकर दर्ज हो जाने वाली ख़बर, और उनमें से एक का भी इनकार न करना — ऐसी ख़बर उनके बाद गढ़ी नहीं जा सकती।

108

भोजन में बरकत

जौ का एक साअ जिसने एक हज़ार को पेट भर खिलाया

> तो मैं उसे रसूलुल्लाह ﷺ के पास लाया ... और उन्होंने कहा: ख़न्दक़ वालों को बुलाओ। और वे एक हज़ार थे ... और उन्होंने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि उन्होंने खाया यहाँ तक कि उसे छोड़कर चले गए, और हमारी हाँडी वैसे ही उबल रही थी जैसी थी।
>
> **बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत**

ख़न्दक़ का दिन — जब लोग भूख से पेट पर पत्थर बाँधे हुए थे

सीधी-सादी बात में

जाबिर ने नबी ﷺ को एक छोटे-से खाने पर बुलाया जो चन्द लोगों के लिए काफ़ी था, और नबी ﷺ ने उन एक हज़ार लोगों को बुला लिया जो ख़न्दक़ खोद रहे थे। **सबने पेट भरकर खाया, और हाँडी फिर भी लबालब थी।**

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह घेराबन्दी के सबसे कठिन दिनों की बात है। मुसलमान भूखे थे, यहाँ तक कि नबी ﷺ ने स्वयं भूख से अपने पेट पर पत्थर बाँधा हुआ था। खाना जौ का एक साअ और एक छोटा बकरी का बच्चा था — जो केवल एक ही घर के लिए काफ़ी था। और जाबिर ने अपनी पत्नी से चुपके से अपने किए पर माफ़ी माँग ली थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पूरी हदीस **सहीह बुख़ारी** में है, जिसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह ने अपने और अपने ही हाल के बारे में रिवायत किया, और वह भी घर के सूक्ष्म ब्योरों के साथ: अपनी पत्नी से उनकी बातचीत, अपनी रुसवाई का डर, नबी ﷺ की यह हिदायत कि हाँडी आग से न उतारी जाए, और यह हुक्म कि उसमें से निकालकर बाँटा जाए और उसे खोला न जाए। और जाबिर अन्त में क़सम खाते हैं: "उन्होंने अल्लाह की क़सम खाकर कहा कि उन्होंने खाया यहाँ तक कि उसे छोड़कर चले गए, **और हमारी हाँडी वैसे ही उबल रही थी जैसी थी**" — अब भी खौलती और भरी हुई।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ऐसी घटना गढ़ी नहीं जा सकती, क्योंकि वह एक ही जगह और एक ही समय **एक हज़ार गवाहों** के सामने घटी। यदि यह झूठ होता तो सेना के सैकड़ों लोग इसका इनकार करते, और उनमें ताक में बैठे मुनाफ़िक़ भी थे। और इससे भी सूक्ष्म बात: रावी **अपनी ही शर्मिन्दगी** बयान करता है और यह डर कि खाना बहुत कम है — ऐसा विवरण कोई गढ़ने वाला, जो अपनी बड़ाई चाहता हो, कभी न जोड़ता। और सहीह संग्रहों में इसके कई समकक्ष हैं: तबूक का खाना, इब्नुल-जर्राह की खजूरें, और जाबिर के पिता का वह क़र्ज़ जो ऐसी खजूरों से चुकाया गया जो उसका दसवाँ हिस्सा भी न ढाँकतीं।

निर्जीव का रोना

109 वह खजूर का तना जो उनके लिए तड़प उठा

मस्जिद खजूर के तनों पर छाई हुई थी, और जब नबी ﷺ ख़ुतबा देते तो उनमें से एक तने के पास खड़े होते। जब उनके लिए मिम्बर बनाया गया ... तो हमने उस तने से गाभिन ऊँटनी के कराहने जैसी आवाज़ सुनी, यहाँ तक कि नबी ﷺ आए और उस पर अपना हाथ रखा तो वह शान्त हो गया।

बुख़ारी की रिवायत — सहीह

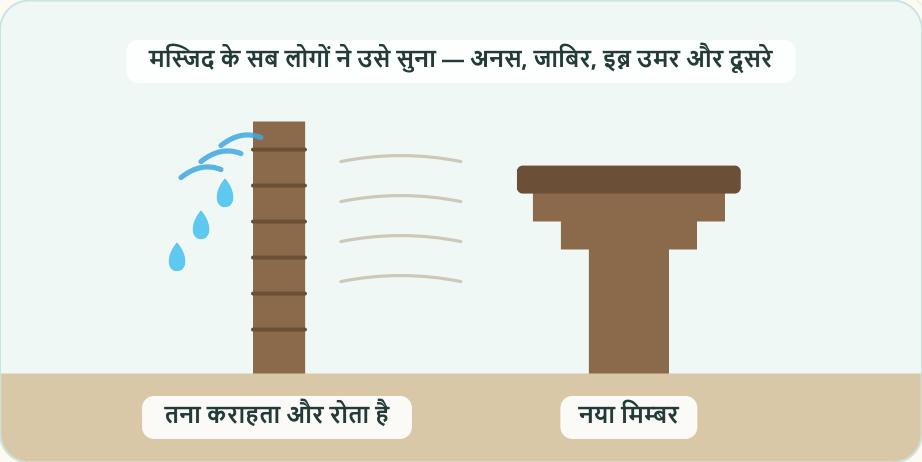

एक खजूर का तना जो अपने बच्चे से बिछड़ी ऊँटनी की तरह कराहा

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ खजूर के एक तने से टिककर ख़ुतबा देते थे। जब उनके लिए मिम्बर बनाया गया तो **वह तना रोया और कराहा** यहाँ तक कि मस्जिद में मौजूद हर व्यक्ति ने उसे सुना — तो वे उतरे और उसे गले लगाया, और वह शान्त हो गया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

तना लकड़ी का एक सूखा टुकड़ा है जिसमें कोई संवेदना नहीं। उसका ऐसी सुनाई देने वाली आवाज़ निकालना जो अपने बच्चे से बिछड़ी ऊँटनी की आवाज़ जैसी हो — ऐसी कोई मिसाल ही नहीं। और उस दिन मस्जिद लोगों से भरी थी, और वह जुमा था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह बुख़ारी** में और अन्यत्र है, और कई सहाबा से बहुत-सी सनदों से रिवायत है: जाबिर बिन अब्दुल्लाह, अनस बिन मालिक, अब्दुल्लाह बिन उमर, उबय्य बिन काब, सहल बिन साद, बुरैदा और दूसरे — यहाँ तक कि विद्वानों ने इसे **तवातुर** वाली रिवायतों में गिना है। हसन बसरी जब इसे रिवायत करते तो कहते: "ऐ मुसलमानो! लकड़ी का एक टुकड़ा रसूलुल्लाह ﷺ की मुहब्बत में उनके लिए तड़पता है; तुम उनके लिए तड़पने के अधिक हक़दार हो।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दलील की ताक़त यह है कि यह **मदीना की मस्जिद में जुमे के दिन** हुआ, यानी नगर के सबसे बड़े साप्ताहिक जमावड़े के सामने, न कि किसी एकान्त में या चन्द लोगों के सामने। बहुत-से सहाबा ने इसे रिवायत किया, हर एक ने अपने शब्दों में, और उन्होंने आवाज़ का वर्णन बहुत मिलते-जुलते शब्दों में किया — "गाभिन ऊँटनी के कराहने जैसी"। और अन्तिम विवरण ही ख़बर को कल्पना से ऊपर उठा देता है: कि **जब उन्होंने उस पर हाथ रखा तो वह शान्त हो गया**, और एक रिवायत में उन्होंने कहा: "यदि मैं उसे गले न लगाता तो वह क़ियामत तक तड़पता रहता।" एक ऐसी ख़बर जिसकी गवाह पूरी मस्जिद बनी, फिर जिसे दर्जनों सहाबा ने रिवायत किया, और उपस्थित लोगों में से किसी ने भी उसका इनकार नहीं किया।

इसरा

110 उन्होंने बैतुल-मक़दिस का वर्णन किया, जबकि उसे कभी देखा ही न था

> पवित्र है वह जो अपने बन्दे को रात में मस्जिदे-हराम से उस दूरतम मस्जिद तक ले गया, जिसके आस-पास हमने बरकत रखी है।
>
> **सूरह अल-इसरा — आयत 1**

उन्होंने सुबह क़ुरैश को बताया, और उन्होंने मस्जिद के बारे में दरवाज़ा-दर-दरवाज़ा पूछा

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ को रात में मक्का से बैतुल-मक़दिस ले जाया गया। जब उन्होंने क़ुरैश को बताया तो उन्होंने उन्हें झुठलाया, और **उनसे मस्जिद का वर्णन माँगा** — और उनमें ऐसे लोग भी थे जिन्होंने उसे देखा था। उन्होंने उन्हें वर्णन किया यहाँ तक कि उन्होंने कहा: "रहा वर्णन, तो उसे उन्होंने ठीक बताया।"

उस समय लोग क्या मानते थे?

मक्का और बैतुल-मक़दिस के बीच लगभग 1,200 किलोमीटर की दूरी है, जिसे क़ाफ़िला एक तरफ़ एक महीने में तय करता है। और नबी ﷺ ने **अपने जीवन में कभी बैतुल-मक़दिस देखा ही न था**। और मक्का में ऐसे बहुत-से व्यापारी थे जो शाम जा चुके थे और मस्जिद देख चुके थे तथा उसकी विशेषताएँ जानते थे। तो चुनौती अपने सबसे ख़तरनाक रूप में थी: **ऐसी जगह का वर्णन करना जिसे तुम्हारे विरोधी जानते हों और तुम न जानते हो**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना **दोनों सहीह संग्रहों** में और अन्यत्र है। बुख़ारी और मुस्लिम जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत करते हैं कि नबी ﷺ ने कहा: "जब क़ुरैश ने मुझे झुठलाया तो मैं हिज्र में खड़ा हुआ, और अल्लाह ने बैतुल-मक़दिस मेरे सामने कर दिया, **और मैं उन्हें उसकी विशेषताएँ बताने लगा जबकि मैं उसे देख रहा था**।" एक दूसरी रिवायत में उन्होंने उनसे उसके दरवाज़ों की संख्या पूछी और उन्होंने गिनकर बता दी। फिर उन्होंने उन्हें उनके अपने एक क़ाफ़िले की ख़बर दी जो रास्ते में था, उसका वर्णन किया और उसके पहुँचने का समय बताया — और वह ठीक वैसे ही आया जैसा उन्होंने कहा था।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह एक ही बैठक में **तुरन्त, सीधी और झुठलाई जा सकने वाली परीक्षा** है। उनसे किसी ऐसी अनुपस्थित और अज्ञेय चीज़ का वर्णन नहीं माँगा गया, बल्कि ऐसी जगह का **जिसे पूछने वाले जानते थे** और वे नहीं जानते थे। किसी एक विवरण में एक ही चूक उसी दिन पूरी दावत को गिरा देने के लिए काफ़ी थी। उन्होंने वर्णन की सटीकता स्वीकार की और फिर मुँह मोड़ लिया — जैसा हर निशानी के साथ उनकी आदत थी। पर सबसे प्रबल गवाही **क़ाफ़िले की ख़बर** है: उन्होंने उन्हें उनके अपने क़ाफ़िले की ख़बर दी कि वह कहाँ है और कब पहुँचेगा, और उन्होंने इन्तज़ार किया और उसे ठीक वैसा ही पाया जैसा उन्होंने कहा था, उसी दिन जो उन्होंने बताया था। एक स्वतंत्र सत्यापन, जो उनके अपने हाथों हुआ, नबी ﷺ के हाथों नहीं।

ग़ैब का ज्ञान

111 मारे जाने वालों के गिरने की जगहें

रसूलुल्लाह ﷺ हमें एक दिन पहले दिखा रहे थे कि बद्र वाले कहाँ गिरेंगे, और कह रहे थे: यह है वह जगह जहाँ कल फ़लाँ गिरेगा, यदि अल्लाह ने चाहा। और उनमें से एक भी उस जगह से नहीं हटा जहाँ रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ रखा था।

मुस्लिम की रिवायत — सहीह

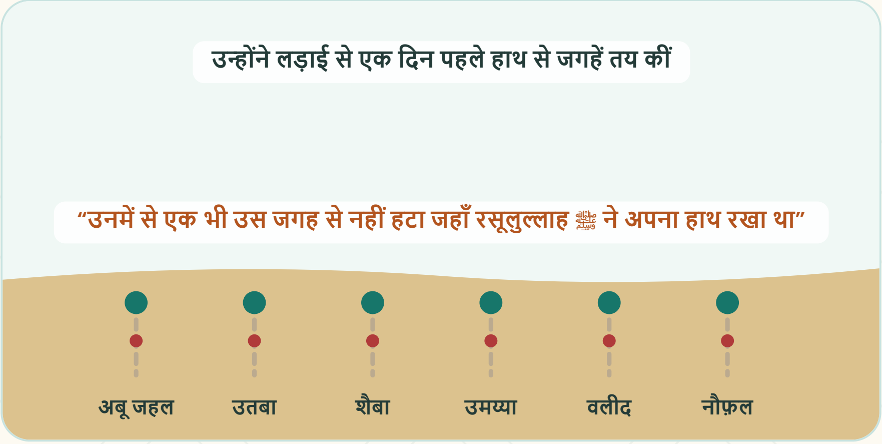

रेत पर निशान लगाए गए... और शव उन्हीं पर पाए गए

सीधी-सादी बात में

बद्र की लड़ाई से एक दिन पहले नबी ﷺ युद्धभूमि पर चले और अपने हाथ से ज़मीन की जगहों की ओर इशारा करते हुए कहते रहे: **यहाँ फ़लाँ मारा जाएगा, और यहाँ फ़लाँ**। जब लड़ाई हुई तो उनमें से एक भी उस जगह से आगे नहीं पड़ा जो उन्होंने बताई थी।

उस समय लोग क्या मानते थे?

बद्र पहला बड़ा टकराव था: मुसलमान तीन सौ से कुछ ऊपर थे और मुशरिक लगभग एक हज़ार। कोई यह निश्चित नहीं कर सकता था कि कौन जीतेगा, मारे जाने वालों के नाम और उनके गिरने की जगहें बताने की तो बात ही दूर। युद्ध में लोग हिलते हैं, झपटते हैं और भागते हैं; तो **ज़मीन का वह टुकड़ा तय कर देना जिस पर हर आदमी गिरेगा** — इसकी कोई मिसाल ही नहीं।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह मुस्लिम** में अनस बिन मालिक से और उमर बिन ख़त्ताब से है। अनस की रिवायत में: "वे कहने लगे: यह है वह जगह जहाँ कल फ़लाँ गिरेगा — और उन्होंने यहाँ और यहाँ ज़मीन पर अपना हाथ रखा। **और उनमें से एक भी उस जगह से नहीं हटा जहाँ रसूलुल्लाह ﷺ ने अपना हाथ रखा था।**" और यह भी स्थापित है कि लड़ाई के बाद वे कुएँ पर खड़े होकर उन्हें नाम ले-लेकर पुकारते रहे: "ऐ फ़लाँ बिन फ़लाँ, क्या तुमने वह सच पाया जो तुम्हारे रब ने तुमसे वादा किया था?"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

भविष्यवाणी यहाँ **घटने से पहले स्वयं ज़मीन पर दर्ज कर दी गई**, और पूरी सेना ने उसे देखा। और यह सभी ख़बरों में सबसे अधिक झुठलाई जा सकने वाली है: एक ही आदमी का कहीं और गिर जाना पूरी बात को तीन सौ गवाहों के सामने ढा देने के लिए काफ़ी था। और इसमें तीन चीज़ें इकट्ठी थीं: **व्यक्तियों के नाम लेना**, **यह कहना कि वे मारे जाएँगे** — यानी कि छोटी सेना जीतेगी — और **जगह को एक बालिश्त तक तय कर देना**। एक ही ख़बर में तीन बन्धन, और अगले ही दिन दोनों सेनाओं की आँखों के सामने पूरे।

एक पशु की शिकायत

वह ऊँट जो रोया और शिकायत की

जब उसने नबी ﷺ को देखा तो वह कराहा और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। तो नबी ﷺ उसके पास आए और उसके कानों के पीछे हाथ फेरा तो वह चुप हो गया। फिर उन्होंने कहा: इस ऊँट का मालिक कौन है? ... क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते इस जानवर के बारे में जिसे अल्लाह ने तुम्हारे क़ब्ज़े में दिया है? इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और थका डालते हो।

अबू दाऊद की रिवायत — अलबानी ने सहीह ठहराया

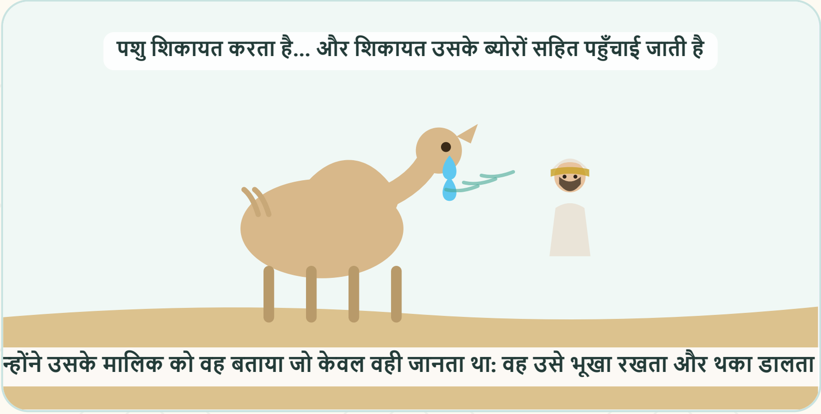

ऊँट चलकर उनके पास आया और उसकी आँखें बहने लगीं — सहाबा की आँखों के सामने

सीधी-सादी बात में

नबी ﷺ अंसार के एक व्यक्ति के चारदीवारी वाले बाग़ में दाख़िल हुए, और एक ऊँट **रोता हुआ** उनके पास आया। उन्होंने उसके सिर पर हाथ फेरा तो वह शान्त हो गया। फिर उन्होंने उसके मालिक को बुलाया और उससे कहा: **"इसने मुझसे शिकायत की है कि तुम इसे भूखा रखते हो और थका डालते हो।"**

उस समय लोग क्या मानते थे?

पशु न शिकायत करता है न समझा जाता है। और किसी आदमी का अपने ऊँट के साथ का व्यवहार उन दोनों के बीच का निजी मामला है; कोई नहीं जानता कि वह अकेले में उसके साथ कैसा सलूक करता है। तो ख़बर में एक साथ दो चीज़ें हैं: **किसी पशु की शिकायत समझना**, और **ऐसे भेद का ज्ञान जो केवल उसके मालिक को है**।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस अबू दाऊद की सुनन और अहमद की मुसनद में अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा से है, जिसे अलबानी और दूसरों ने सहीह ठहराया। और सहीह संग्रहों में इसके स्थापित समकक्ष हैं: **ख़ैबर की ज़हरीली बकरी** की हदीस, जिसने उन्हें बताया कि वह ज़हरीली है तो वे रुक गए और अपने साथियों को चेता दिया (बुख़ारी और मुस्लिम), और **उस भेड़िए की हदीस जिसने चरवाहे से बात की** और उसे नबी ﷺ के आने की ख़बर दी (अहमद की रिवायत, सहीह ठहराई गई)। अरब ऐसी चीज़ों के बारे में कुछ न जानते थे और उन्हें चकित पाते थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

घटना का व्यावहारिक परिणाम ही उसे उसका महत्व देता है। नबी ﷺ निशानी दिखाने पर नहीं रुके, बल्कि उसे **पशुओं पर दया का एक क़ानून** बना दिया: "क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते इस जानवर के बारे में जिसे अल्लाह ने तुम्हारे क़ब्ज़े में दिया है?" और यह उनके अमल के एक पूरे अध्याय से मेल खाता है: पशुओं को यातना देने और उन्हें निशाना बनाने की मनाही, उस स्त्री की हदीस जो एक बिल्ली को बाँध रखने के कारण आग में गई, और वह आदमी जिसे एक कुत्ते को पानी पिलाने के कारण माफ़ कर दिया गया। यह सब सातवीं सदी ईस्वी में आए, ऐसे माहौल में जो अपने जानवरों के प्रति लापरवाह था — और दुनिया की पहली पशु-क्रूरता निवारण संस्था से एक हज़ार वर्ष से भी पहले — यह अपने आप में एक और संकेत है।

113

प्रकट सुरक्षा

वह ज़हरीली बकरी जिसने उन्हें बता दिया

> ख़ैबर की एक यहूदी स्त्री ने उन्हें एक भुनी हुई बकरी पेश की जिसमें उसने ज़हर मिला रखा था ... उन्होंने उसका एक कौर लिया पर निगला नहीं और कहा: यह हड्डी मुझे बता रही है कि यह ज़हरीली है।
>
> **बुख़ारी, मुस्लिम और अबू दाऊद की रिवायत**

ख़ैबर की विजय के बाद तोहफ़े में दिए गए खाने में मिलाया गया ज़हर

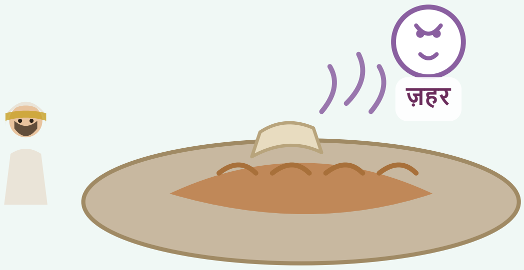

ाए और अपने साथियों को चेता दिया — तो सब बच गए सिवाय उसके जिसका कौर पहले निगला जा

एक स्त्री उन्हें परखना चाहती थी: यदि वे नबी हैं तो उन्हें बता दिया जाएगा; और यदि बादशाह हैं तो हम उनसे छूट जाएँगे

सीधी-सादी बात में

एक यहूदी स्त्री ने नबी ﷺ को एक भुनी हुई बकरी पेश की जिसमें उसने ज़हर डाल रखा था। जब उन्होंने एक कौर लिया तो **उसे निगला नहीं**, और कहा: "यह दस्ती मुझे बता रही है कि यह ज़हरीली है।"

उस समय लोग क्या मानते थे?

यह ख़ैबर की विजय के बाद की बात है, और दुश्मनी खुली और सक्रिय थी। भुने हुए मांस में मिला ज़हर न देखने से पकड़ में आता है न सूँघने से। और स्त्री ने स्वयं पूछे जाने पर कहा कि वह जानना चाहती थी — **"यदि वे नबी हैं तो उन्हें बता दिया जाएगा, और यदि बादशाह हैं तो हम उनसे छूट जाएँगे"**। यानी उसने मामले को एक निर्णायक परीक्षा के रूप में गढ़ा था।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह घटना **सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम** में तथा अबू दाऊद और दारिमी की सुनन में है, और अनस, अबू हुरैरा, जाबिर, इब्न अब्बास और दूसरों से है। स्त्री की अपनी स्वीकृति और इस काम में उसका उद्देश्य भी इसी में रिवायत है। और बिश्र बिन बरा रज़ियल्लाहु अन्हु का देहान्त इसलिए हुआ कि उन्होंने चेतावनी से पहले अपना कौर निगल लिया था — ऐसा विवरण कोई गढ़ने वाला कभी न जोड़ता, क्योंकि यह दिखाता है कि उस निशानी ने हर हानि नहीं रोकी।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस घटना की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि **परीक्षा विरोधी ने गढ़ी** और अपनी शर्त पहले से घोषित कर दी: नुबूवत इसी से जानी जाएगी कि उन्हें ज़हर की ख़बर दी जाए। फिर शर्त ठीक-ठीक पूरी हुई, और उसने लोगों के सामने इसे स्वीकार किया। फिर मामले का भार और बढ़ गया: **नबी ﷺ ने उसे माफ़ कर दिया** — सबसे प्रसिद्ध रिवायतों में — और यह उस व्यक्ति का आचरण है जो निश्चिन्त हो, किसी डरे हुए बदला लेने वाले का नहीं। और वह अन्तिम विवरण जो रिवायत की ईमानदारी तय कर देता है वह है **एक सहाबी के देहान्त** का ज़िक्र उस ज़हर से; रिवायत ने घटना को सजाया नहीं और न उसे कोई पूरी विजय बनाया, बल्कि उसे उसकी मिठास के साथ उसकी कड़वाहट सहित बयान किया।

एक क़बूल हुई दुआ

114 वह वर्षा जो माँगने पर आई और माँगने पर रुक गई

उन्होंने अपने हाथ उठाए और कहा: ऐ अल्लाह, हमें वर्षा दे ... अल्लाह की क़सम, हमें आकाश में कोई बादल दिखाई नहीं देता था ... और उन्होंने अपना हाथ नीचे भी न किया था कि बादल पहाड़ों की तरह उठ आए, और वे उतरे भी न थे कि वर्षा उनकी दाढ़ी से बह रही थी।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

फिर उन्होंने दुआ की और वह रुक गई — और अकेले मदीना से हट गई

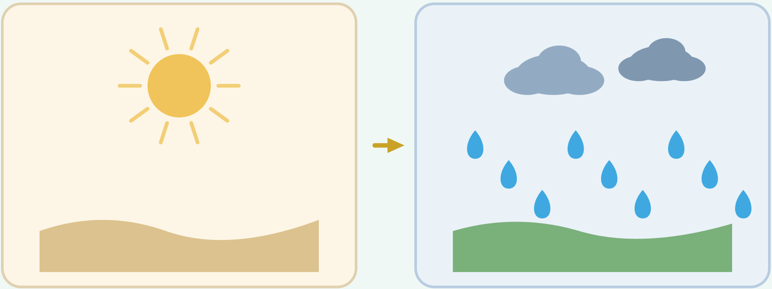

बिना बादल का साफ़ आकाश | **पूरे एक सप्ताह की वर्षा**

मदीना धूप में, और उसके चारों ओर सब कुछ बरसता हुआ — जैसा अनस ने वर्णन किया

सीधी-सादी बात में

जुमे के ख़ुतबे के दौरान एक आदमी सूखे की शिकायत लेकर आया, तो नबी ﷺ ने अपने हाथ उठाए और दुआ की — **जबकि आकाश साफ़ था और उसमें एक बादल तक न था**। उन्होंने अपना हाथ नीचे भी न किया था कि बादल उठ आए, और पूरे एक सप्ताह वर्षा होती रही यहाँ तक कि लोगों ने अधिक वर्षा की शिकायत की, तो उन्होंने दुआ की और वह रुक गई।

उस समय लोग क्या मानते थे?

वर्षा की दुआ क़ौमों में एक प्राचीन रिवाज है, पर वह एक ऐसी प्रार्थना है जिसकी आशा की जाती है, कोई पूरा किया जाने वाला वादा नहीं। और साफ़ आकाश से क्षणों के भीतर वर्षा नहीं गिरती। और यह कि ऐसा **दो बार, उलटी दिशाओं में** हो — माँगने पर बरसना और फिर माँगने पर रुक जाना — यह संयोग की हर सम्भावना से आगे की बात है।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **दोनों सहीह संग्रहों** में अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से है। अनस ने दृश्य का वर्णन चौंकाने वाली बारीकी से किया: कि आकाश बिलकुल साफ़ था, कि बादल "पहाड़ों की तरह" उठे, और कि वर्षा अगले जुमे तक चली। फिर जब नबी ﷺ ने उसके थमने की दुआ की तो अनस ने कहा: **"वह रुक गई, और हम धूप में चलते हुए निकले"**, और एक दूसरी रिवायत में: "वह मदीना से यूँ हट गई जैसे कोई कपड़ा हट जाए" — यानी वर्षा **अकेले** मदीना से हटी और उसके चारों ओर बनी रही।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

अन्तिम विवरण ही इस ख़बर की सबसे प्रबल चीज़ है। किसी दुआ के बाद वर्षा का गिरना — इसे कहा जा सकता था कि वह अपने मौसम से जा मिला। पर **उसका अकेले मदीना से हट जाना और उसके चारों ओर बने रहना** एक ऐसी परिघटना है जिसे संयोग से नहीं समझाया जा सकता, और मदीना के सारे लोगों ने उसे एक ही दिन अपनी आँखों से देखा। और दूसरी दुआ के शब्दों पर ध्यान दीजिए, जो अत्यन्त सूक्ष्म हैं: **"ऐ अल्लाह, हमारे चारों ओर, हम पर नहीं"** — उन्होंने वर्षा के बिलकुल उठ जाने की दुआ नहीं माँगी, बल्कि यह कि वह मदीना से हटकर उसके आस-पास की ओर मोड़ दी जाए, क्योंकि लोगों को उसकी ज़रूरत थी। और वह ठीक उसी सूक्ष्म रूप में पूरी हुई जिस रूप में माँगी गई थी।

चंगाई

115 अली की आँख — और क़तादा की आँख

उन्होंने उनकी आँखों में अपना लुआब लगाया और उनके लिए दुआ की, तो वे ऐसे ठीक हो गए मानो उन्हें कभी कोई तकलीफ़ थी ही नहीं।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

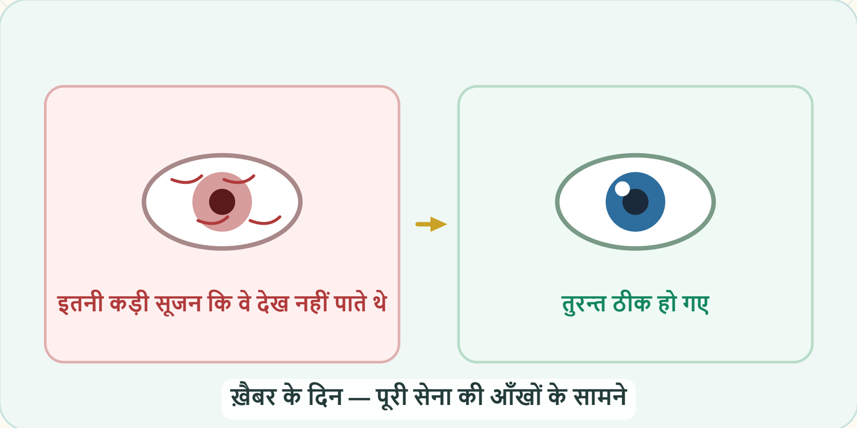

अली की आँखें इतनी सूजी थीं कि वे मुश्किल से देख पाते थे; क्षणों बाद झंडा उनके हाथ में था

सीधी-सादी बात में

ख़ैबर के दिन नबी ﷺ ने कहा: **मैं कल झंडा ऐसे व्यक्ति को दूँगा जो अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता है**। उन्होंने अली को बुलाया — जिनकी आँखें ऐसी बीमार थीं कि वे देख नहीं पाते थे — **और उनकी आँखों में अपना लुआब लगाया, तो वे तुरन्त ठीक हो गए**, और फिर ख़ैबर उन्हीं के हाथों खुला।

उस समय लोग क्या मानते थे?

आँख की सूजन उस माहौल की एक जानी-मानी बीमारी थी, और उसका धैर्य और समय के सिवा कोई इलाज न था। वह क्षणों में ठीक नहीं होती। और यह घटना एक तनावपूर्ण सैनिक क्षण में हुई, जब सेना इन्तज़ार में थी और यह जानने को उत्सुक कि झंडा कौन उठाएगा — उमर ने कहा: “मैंने उस दिन के सिवा कभी सरदारी की इच्छा नहीं की।”

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **दोनों सहीह संग्रहों** में सहल बिन साद, अबू हुरैरा और सलमा बिन अल-अकवा से है। और इसका समकक्ष वह है जो **क़तादा बिन नोमान** रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख के बारे में उहुद के दिन स्थापित है — उनकी आँख पर ऐसी चोट लगी कि वह उनके गाल पर आ गिरी, और नबी ﷺ ने उसे अपने हाथ से वापस बिठा दिया और उनके लिए दुआ की, तो वही उनकी दोनों आँखों में बेहतर और तेज़ हो गई। यह बात उनके ख़ानदान में जानी जाती रही यहाँ तक कि उनके पोते ने ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल-अज़ीज़ के सामने उसका ज़िक्र किया।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

दो बातें इस घटना को महज़ दावे के दायरे से बाहर निकाल देती हैं। पहली, कि यह **जमावड़े के क्षण पर एक पूरी सेना के सामने** हुई, जब हर आँख झंडा उठाने वाले पर थी। दूसरी — और अधिक महत्वपूर्ण — कि चंगाई अपने आप में कोई लक्ष्य न थी, बल्कि **एक ज़िम्मेदारी निभाने की शर्त** थी: झंडा उन्हें तुरन्त सौंप दिया गया और वे लड़ने निकल पड़े, और क़िला उसी दिन उन्हीं के हाथों खुला। यदि वे सचमुच ठीक न हुए होते तो यह एक घंटे के भीतर खुल जाता। रही क़तादा की आँख, तो उसका निशान **दशकों तक दिखाई देता रहा** — एक ऐसी निशानी जिसे लोग उस व्यक्ति के चेहरे पर जीवन भर देखते रहे, कोई महज़ रिवायत की गई ख़बर नहीं।

116 सुराक़ा और उसका घोड़ा जो ज़मीन में धँस गया

> जब मैं अपने घोड़े पर सवार था ... मेरा घोड़ा ठोकर खा गया और मैं गिर पड़ा ... फिर मैं दोबारा सवार हुआ, और जब वे दोनों नज़र आए तो उसके अगले पाँव घुटनों तक ज़मीन में धँस गए।
>
> **बुख़ारी की रिवायत — सहीह**

एक पीछा करने वाला जो सौ ऊँटों के लिए निकला था... और अमान माँगता हुआ लौटा

सीधी-सादी बात में

सुराक़ा हिजरत के दौरान नबी ﷺ और अबू बक्र का पीछा करता हुआ निकला। और हर बार जब वह उनके क़रीब पहुँचता, **उसके घोड़े के पाँव ठोस ज़मीन में** घुटनों तक धँस जाते। उसे समझ आ गया कि उसे रोका जा रहा है, और उसने उनसे अमान माँगी।

उस समय लोग क्या मानते थे?

क़ुरैश ने मुहम्मद ﷺ को ज़िन्दा या मुर्दा पकड़ लाने वाले के लिए सौ ऊँटों का इनाम रखा था। और सुराक़ा बनू मुदलिज का एक कुशल, मँजा हुआ घुड़सवार था, और वह क़ौम खोज लगाने तथा पद-चिह्न पढ़ने वालों की थी। दृश्य खुले रेगिस्तान में था जहाँ भागने की कोई जगह न थी, और उन दोनों के पास कोई पनाह न थी।

आज विज्ञान क्या कहता है?

पूरे ब्योरे सहित यह कहानी **सहीह बुख़ारी** में है, आयशा और अबू बक्र से आई हिजरत की लम्बी हदीस के भीतर, और **सुराक़ा स्वयं उसे रिवायत करता है** अपने इस्लाम क़बूल करने के बाद। उसने दर्ज किया कि उसका घोड़ा उसके नीचे एक से अधिक बार धँसा, कि उसने तीरों से क़ुरा निकाला और वह परिणाम निकला जो उसे नापसन्द था, और उसने उसकी अवहेलना की — और फिर, जब वह निराश हो गया, तो उसने पुकारकर अमान की पेशकश की और उन्हें राशन तथा सामान देने को कहा। नबी ﷺ ने उसके लिए अमान का एक पत्र लिखवाया, जिसे वह मक्का की विजय के दिन लेकर आया। और उसी क्षण उन्होंने उससे कहा: "तुम्हारा क्या हाल होगा जब तुम किसरा के दोनों कंगन पहनोगे?" — जिन्हें उसने बाद में पहना।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

इस ख़बर की सबसे प्रबल बात यह है कि **इसका रावी स्वयं विरोधी है**। सुराक़ा घटना के दिन मुसलमान न था; वह तो इनाम का लालची पीछा करने वाला था। उसने वर्षों बाद इस्लाम क़बूल किया और लोगों को बताया कि उसके साथ क्या हुआ था। और किसी विरोधी की अपने ही विरुद्ध गवाही, जिसमें वह अपनी असफलता और जो उसने देखा उसे स्वीकार करे, रिवायत के विद्वानों के यहाँ प्रमाण के सबसे ऊँचे दर्जों में है। और उस विचित्र विवरण पर भी ध्यान दीजिए जिसे कोई गढ़ता नहीं: कि घोड़ा **कई बार धँसा, एक बार नहीं**, और हर बार वह फिर कोशिश पर लौटा, यहाँ तक कि आख़िर में निराश हो गया। कोई पीछा करने वाला यदि कहानी गढ़ता तो उसे क़त्ल की कोशिश पर इस बार-बार की ज़िद के साथ कभी न बयान करता।

117

सलमान फ़ारसी और तीन निशानियाँ

और उसने मुझसे उसका हुलिया बयान किया: वह सदक़ा नहीं खाता, तोहफ़ा क़बूल करता है, और उसके दोनों कन्धों के बीच नुबूवत की मुहर है।

अहमद और इब्न हिब्बान की रिवायत — सनद अच्छी

तीन निशानियाँ जिन्हें उन्होंने स्वयं परखा

- उन्होंने उन्हें सदक़ा पेश किया... तो उन्होंने नहीं खाया
- उन्होंने उन्हें तोहफ़ा पेश किया... तो उन्होंने उनके साथ खाया
- उन्होंने उनकी पीठ देखी तो नुबूवत की मुहर पाई

तो वे उसी बैठक में मुसलमान हो गए

एक व्यक्ति जिसने इन तीन निशानियों की तलाश में फ़ारस और शाम पार किए

वे निशानियाँ जो नुबूवत से पहले एक ईसाई संन्यासी से सुनी गईं... और फिर पाई गईं

सीधी-सादी बात में

सलमान फ़ारसी ने अपनी क़ौम का धर्म छोड़ा और सत्य की खोज में देश-देश घूमे, यहाँ तक कि एक संन्यासी ने उन्हें प्रतीक्षित नबी की तीन निशानियाँ सौंपीं। जब वे मदीना पहुँचे तो **उन्होंने तीनों निशानियाँ स्वयं परखीं और पाईं** — तो इस्लाम क़बूल कर लिया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

शाम और अन्य जगहों के अहले-किताब अरबों की भूमि में भेजे जाने वाले एक नबी का इन्तज़ार कर रहे थे, और वे उसकी निशानियाँ आगे पहुँचाते आए थे। सलमान फ़ारस से निकले और कई वर्ष संन्यासियों के बीच घूमते रहे, यहाँ तक कि उन्हें ग़ुलाम बनाकर बेच दिया गया और वे मदीना पहुँचे — हिजरत से वर्षों पहले।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह कहानी स्वयं सलमान से अहमद की मुसनद, इब्न हिब्बान की सहीह और इब्न इसहाक़ की सीरत में रिवायत है। उसमें वे खजूरें लाए और कहा: यह सदक़ा है। नबी ﷺ ने अपने साथियों से कहा: "खाओ", और ख़ुद नहीं खाया। फिर वे दूसरी खजूरें लाए और कहा: यह तोहफ़ा है। और उन्होंने उनके साथ खाया। फिर सलमान देखने के लिए उनके पीछे की ओर घूमे, और नबी ﷺ ने समझ लिया कि वे क्या चाहते हैं तो अपनी चादर पीठ से गिरा दी, और सलमान ने मुहर देखी, और उस पर गिरकर उसे चूमने और रोने लगे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह कोई ब्रह्मांडीय चमत्कार नहीं, बल्कि हर अर्थ में **एक व्यवस्थित वैज्ञानिक परीक्षण** है: पहले से निर्धारित परिकल्पनाएँ, हर एक के लिए एक प्रयोग, और एक परिणाम जिसे स्वीकार या अस्वीकार किया जाए। सलमान ने न किसी तार्किक दलील पर इस्लाम क़बूल किया न किसी भावना पर, बल्कि **तीनों शर्तें पूरी होने के बाद**। और उनमें सबसे सूक्ष्म दूसरी है: **सदक़े और तोहफ़े** के बीच का भेद — एक ऐसा शरई हुक्म जो ख़ास नबी ﷺ का है (सदक़ा उन पर हराम है, तोहफ़ा हलाल), और जिस पर कोई अनुमान से निशाना नहीं बैठा सकता। और कई रिवायतें दर्ज करती हैं कि संन्यासियों और रब्बियों ने नुबूवत से पहले ये निशानियाँ बताईं — उनमें बहीरा संन्यासी, ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल, और अब्दुल्लाह बिन सलाम हैं।

एक क़बूल हुई दुआ

118 उन्होंने अनस के लिए दुआ की — और वे अंसार में सबसे धनी हो गए

ऐ अल्लाह, इसका माल और इसकी सन्तान बढ़ा दे और जो तूने इसे दिया है उसमें बरकत दे। अनस ने कहा: अल्लाह की क़सम, मेरा माल भरपूर है, और मेरी सन्तान तथा मेरी सन्तान की सन्तान आज लगभग सौ हैं।

बुख़ारी और मुस्लिम की रिवायत — सर्वसम्मत

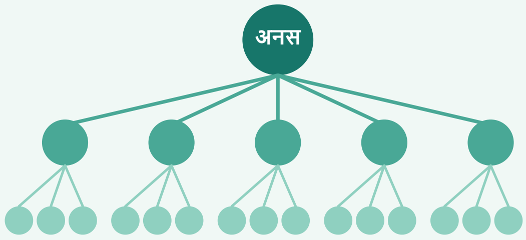

"और मेरी सन्तान तथा मेरी सन्तान की सन्तान आज लगभग सौ हैं"
और वे लगभग सौ वर्ष जिए — बसरा में देहान्त पाने वाले अन्तिम सहाबी

एक ग़रीब घर में की गई दुआ... जिसका पात्र जीवन भर उसके पूरे होने का गवाह बना

सीधी-सादी बात में

उम्मे सुलैम ने नबी ﷺ से अपने बेटे अनस के लिए दुआ माँगी, तो उन्होंने उनके लिए **भरपूर माल, बहुत सन्तान और बरकत** की दुआ की। और अनस ने यह सब अपनी आँखों से देखा और लोगों को बताया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

अनस उस समय दस वर्ष के एक छोटे बालक थे, जिन्होंने दस वर्ष नबी ﷺ की सेवा की। उनका ख़ानदान न अंसार में सबसे धनी था न सबसे बड़ी संख्या वाला। और दुआ में **तीन निश्चित चीज़ें** थीं जिन्हें एक जीवन के बाद नापा जा सकता था: माल, सन्तान, और दोनों में बरकत।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **दोनों सहीह संग्रहों** में है। और स्वयं अनस दशकों बाद अल्लाह की क़सम खाकर उसका पूरा होना बयान करते हैं: "मेरा माल भरपूर है, और मेरी सन्तान तथा मेरी सन्तान की सन्तान आज लगभग सौ हैं।" एक रिवायत में, हज्जाज के बसरा आने से पहले उनकी सन्तान में से लगभग एक सौ बीस दफ़्न हो चुके थे। उनका बाग़ साल में दो बार फल देता था। और वे लगभग सौ वर्ष जिए, और **बसरा में देहान्त पाने वाले अन्तिम सहाबी** थे।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह किसी और ही क़िस्म का प्रमाण है: **एक ऐसी भविष्यवाणी जिसका पात्र स्वयं उसके पूरे होने का गवाह बनता है और उसे बयान करता है**। रावी ही लाभार्थी है और वही गवाह, और वह इसे बसरा में बयान करता है जहाँ उसके चारों ओर हज़ारों लोग हैं जो उसके हालात जानते हैं और उसकी सन्तान, उसके पोते और उसका माल देखते हैं। यदि उसने बढ़ा-चढ़ाकर कहा होता तो उसके अपने नगर के लोग उसे रद्द कर देते। और इसके कई स्थापित समकक्ष हैं: इब्न अब्बास के लिए समझ और क़ुरआन की व्याख्या की उनकी दुआ, तो वे "उम्मत के विद्वान" बन गए; साद बिन अबी वक़्क़ास के लिए दुआ कि उनकी दुआएँ क़बूल हों, तो उनकी दुआओं से डर लगने लगा; और उस व्यक्ति के विरुद्ध दुआ जिसने घमंड से बाएँ हाथ से खाया, तो वह उसे फिर कभी अपने मुँह तक न उठा सका। अलग-अलग लोगों के बारे में अलग-अलग ख़बरें, और हर एक अपने आप में झुठलाई जा सकने वाली।

निर्जीव की तस्बीह

119 वह खाना जो उनके सामने अल्लाह की तस्बीह करता था

> हम खाने को तस्बीह करते सुनते थे जबकि वह खाया जा रहा होता था।
>
> **बुख़ारी की रिवायत — सहीह**

खाने से आती एक आवाज़, जबकि वह खाया जा रहा हो

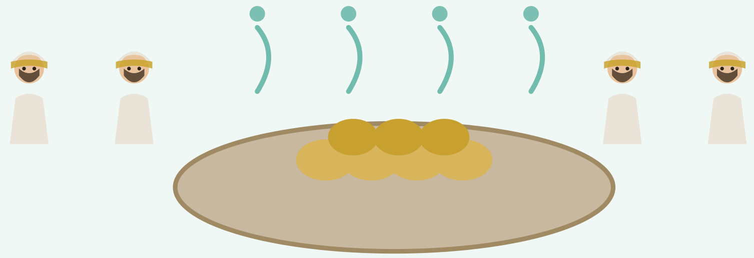

उपस्थित सबने उसे सुना — इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत

वे इन निशानियों को बरकत गिनते थे, डर की चीज़ नहीं

सीधी-सादी बात में

इब्न मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: **"हम खाने को तस्बीह करते सुनते थे जबकि वह खाया जा रहा होता था"** — यानी वे नबी ﷺ की मौजूदगी में खाने से आती तस्बीह की आवाज़ सुनते थे।

उस समय लोग क्या मानते थे?

निर्जीव चीज़ों की कोई आवाज़ नहीं होती। खाना चुपचाप खाया जाता है। उससे तस्बीह सुनाई देना ऐसी बात है जिसकी किसी के अनुभव में कोई मिसाल ही नहीं। और नबी ﷺ के सिवा किसी के बारे में ऐसा कुछ रिवायत नहीं हुआ।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह ख़बर **सहीह बुख़ारी** में है, इस्लाम में नुबूवत की निशानियों के अध्याय में। अब्दुल्लाह बिन मसऊद इसे बहुवचन में रिवायत करते हैं: "**हम सुनते थे**" — यानी एक दोहराया जाने वाला सामूहिक अवलोकन, कोई इकलौती अलग-थलग घटना नहीं। और इसका समकक्ष **कंकड़ियों की तस्बीह** की वह स्थापित ख़बर है जो उनकी हथेली में हुई, और उस पत्थर की जो मक्का में उन्हें सलाम करता था, जैसा सहीह मुस्लिम में जाबिर बिन समुरा से है: "मैं मक्का के एक पत्थर को जानता हूँ जो मुझे भेजे जाने से पहले मुझे सलाम करता था; मैं उसे अब भी जानता हूँ।"

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ताक़त बहुवचन और निरन्तर रूप में है: "**हम सुनते थे**"। यदि यह एक बार होता तो कहा जाता "हमने सुना"। जो रूप इस्तेमाल हुआ वह दोहराव और आदत बताता है — यानी यह उनके बीच एक जानी-पहचानी बात थी जिसे पूरा समूह जानता था। ऐसी बात ऐसे माहौल में गढ़ी नहीं जाती जहाँ सैकड़ों जीवित गवाह हों। और क़ुरआन इस पूरे विषय के पीछे का सामान्य सिद्धान्त बता देता है: "**और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी प्रशंसा के साथ उसकी तस्बीह न करती हो, पर तुम उनकी तस्बीह समझते नहीं**" — तस्बीह हर चीज़ में निरन्तर है, और नबी ﷺ की मौजूदगी में जो हुआ वह **उसे सुनने से परदे का हटना** था, कोई नई चीज़ का पैदा होना नहीं।

120

एक वादा की गई सुरक्षा

अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे, और वे हम पर नहीं

> अल्लाह की क़सम, वे तुम तक नहीं पहुँचेंगे जब तक मैं तुमसे पहले मर न जाऊँ ... और उन्होंने ﷺ ख़न्दक़ के दिन कहा: अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे और वे हम पर नहीं; हम उनके पास जाएँगे।
>
> **बुख़ारी की रिवायत — सहीह**

पहल का पूरा उलट जाना... और वह भी घटने से पहले घोषित

सीधी-सादी बात में

जब अहज़ाब की सेनाएँ मदीना से लौट गईं, तो नबी ﷺ ने कहा: **“अब हम उन पर चढ़ाई करेंगे और वे हम पर नहीं; हम उनके पास जाएँगे।”** और उस दिन के बाद क़ुरैश ने मदीना पर फिर कभी हमला नहीं किया।

उस समय लोग क्या मानते थे?

ख़न्दक़ की घेराबन्दी मुसलमानों पर गुज़री सबसे कठिन चीज़ थी। दस हज़ार लड़ाके मदीना को घेरे हुए थे, बनू क़ुरैज़ा के यहूदियों ने भीतर से अहद तोड़ दिया था, और भूख, ठंड तथा डर था। क़ुरआन कहता है: “**और दिल गले तक आ पहुँचे, और तुम अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे**”। और ठीक उसी क्षण पहल के उलट जाने की घोषणा हुई।

आज विज्ञान क्या कहता है?

यह हदीस **सहीह बुख़ारी** में है। और ठीक वैसा ही हुआ जैसा उन्होंने कहा: ख़न्दक़ (5 हिजरी) के बाद क़ुरैश एक बार भी मदीना पर चढ़ाई करने नहीं निकले। बल्कि मुसलमान ही पहल करने वाले बन गए: 6 हिजरी में हुदैबिया, फिर 7 हिजरी में ख़ैबर, फिर 8 हिजरी में मक्का की विजय, फिर हुनैन और तबूक। यह एक सैनिक तथ्य है जिस पर सीरत और इतिहास की सारी किताबें एकमत हैं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

यह **एक रणनीतिक ख़बर है, कोई आध्यात्मिक नहीं**, और यही उसे विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक जाँच के लिए खुला रखता है। और वह **सबसे बुरे सम्भव क्षण** पर जारी हुई — जब हर संकेत उलटा कह रहा था। ज्ञात नियम यही है कि जो किसी दम घोंटती घेराबन्दी से बचकर निकले वह अपनी स्थिति सुधारने में लगता है, हमला करने में नहीं। और हदीस के शब्दों पर ध्यान दीजिए: उन्होंने यह नहीं कहा “हम विजयी होंगे” — जो एक आम बात है और हर चीज़ से मेल खा जाती — बल्कि **पहल के हस्तान्तरण** को निर्धारित किया: “हम उनके पास जाएँगे”। और यह अगले तीन वर्षों में सचमुच जो हुआ उसका सटीक वर्णन है: उसके बाद का हर अभियान मदीना से बाहर निकला, मदीना की ओर नहीं आया।

सार

121 हम इन ख़बरों पर भरोसा क्यों करें?

> ऐ ईमान वालो, यदि कोई अवज्ञाकारी तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो उसकी जाँच कर लो, कहीं ऐसा न हो कि तुम अनजाने में किसी क़ौम को हानि पहुँचा बैठो और फिर अपने किए पर पछताओ।
>
> सूरह अल-हुजुरात — आयत 6

हदीस के विद्वानों के यहाँ ख़बर क़बूल करने के मानदंड

- ✓ एक अटूट सनद जिसमें हर रावी का नाम लिया जाता है
- ✓ हर रावी की ईमानदारी और उसकी याददाश्त — और उसकी एक दर्ज जीवनी
- ✓ ख़बर का अनियमितता और छिपे दोष से ख़ाली होना
- ✓ भरोसेमन्द रावियों का शब्द और अर्थ में एक-दूसरे से मेल खाना

एक ऐसा विज्ञान जिसकी किसी दूसरी क़ौम में कोई मिसाल नहीं

आलोचना का विज्ञान: लाखों रावियों के जीवन दर्ज किए गए और जाँचे गए

सीधी-सादी बात में

ये ख़बरें हम तक मुँह-दर-मुँह चलने वाली कहानियों की तरह नहीं पहुँचीं। वे **एक कठोर प्रलेखन-व्यवस्था** के ज़रिये पहुँचीं: हर ख़बर के साथ नामज़द रावियों की एक सनद है, और हर रावी की एक लिखित जीवनी है जो उसकी ईमानदारी और उसकी याददाश्त जाँचती है।

उस समय लोग क्या मानते थे?

इस्लाम से पहले की क़ौमों ने अपने नबियों की ख़बरें बिना सनदों के आगे पहुँचाईं। न यह ज्ञात है कि किसने किससे पहुँचाया, न यह कि वे कब लिखी गईं, और न यह कि पहुँचाने वाला भरोसेमन्द था या नहीं। और इसीलिए क़ौमों की किताबों में सहीह गढ़े हुए से घुल-मिल गया, और इतिहास किंवदन्ती से।

आज विज्ञान क्या कहता है?

मुसलमानों ने **सनद का विज्ञान** और **आलोचना तथा प्रामाणीकरण का विज्ञान** गढ़ा, और लाखों रावियों की जीवनियाँ दर्ज कीं: हर एक का जन्म और देहान्त, उसके उस्ताद, उसके शागिर्द, उसकी यात्राएँ, उसकी याददाश्त की हालत, बुढ़ापे में उसका ज़ेहन बिगड़ा या नहीं, और जो उसने रिवायत किया उसकी दूसरों ने पुष्टि की या नहीं। रावियों की किताबें — जैसे तहज़ीबुल-कमाल और मीज़ानुल-एतिदाल — इसी के विशाल विश्वकोश हैं। जर्मन प्राच्यविद् श्प्रेंगर ने कहा कि मुसलमानों ने जीवनी का ऐसा विज्ञान पैदा किया जिसकी मिसाल दूसरी क़ौमें नहीं जानती थीं।

यह निर्णायक चमत्कार क्यों है?

ध्यान दीजिए कि इस भाग की ख़बरों में ऐसी विशेषताएँ साझा हैं जिनसे बच निकलना कठिन है: **उनका बड़ी संख्या में गवाहों के सामने घटित होना** — ख़न्दक़ में एक हज़ार, बद्र में तीन सौ, खजूर के तने की हदीस में एक पूरी मस्जिद; **उनका कई स्वतंत्र सनदों से रिवायत होना** ऐसे सहाबा से जिन्होंने उन्हें गढ़ने में कोई साँठगाँठ नहीं की; **उनमें ऐसी बातों का होना जो बड़ाई नहीं बढ़ातीं** — एक सहाबी का ज़हर से देहान्त, जाबिर का यह डर कि खाना बहुत कम है; और **विरोधियों का उन्हें रद्द करने के बारे में चुप रह जाना**, हालाँकि वे ऐसा करने के सबसे अधिक इच्छुक थे। और मानव इतिहास में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसकी ख़बरें, बातें और काम इतनी बारीकी और इतने ब्योरे के साथ पहुँचाए गए हों।